पुस्तक समीक्षा

संवेदनाओं को झकझोरता एक संग्रह

लघुकथा कहानी-साहित्य की वह विधा है जिसमें लेखक किसी स्थिति, घटना, विचार या अनुभव को सरल व सूक्ष्म रूप से प्रस्तुत करता है। उज्जैन में पश्चिम रेलवे के अंतर्गत लोको पायलट पद पर कार्यरत श्री संतोष सुपेकर ने 140 पृष्ठों के अपने नये लघुकथा संग्रह 'बंद आँखों का समाज' की 127 लघुकथाओं में भ्रष्ट राजनीति, साम्प्रदायिकता, भाषावाद और बाज़ारवाद से उपजी विसंगतियों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। कथानक की प्रखरता, भाषा की सरलता, शैली और शिल्प की सुंदरता और शीर्षकों की सटीकता सुपेकर की लघुकथाओं को पठनीय बनाती है। 'बंद आँखों का समाज' की रचनाएँ वस्तुतः तेज़ी से संवेदनहीन होते समाज की ओर इशारा करती हैं, जिसे रचनाकार ने अपनी खुली आँखों से देखकर संग्रह में प्रस्तुत किया है। कुछ रचनाओं के शीर्षक ही लेखक के सामाजिक सरोकारों और कथानक की सघनता को स्पष्ट करते हैं। जैसे-दशरथ वनवास, संस्कृति एक्सप्रेस, नोटों वाली झाड़ू, स्तब्ध आशीर्वाद, ठहाकों का दर्द, आंतकी शब्दकोष, मनुष्यों का जंगल इत्यादि।

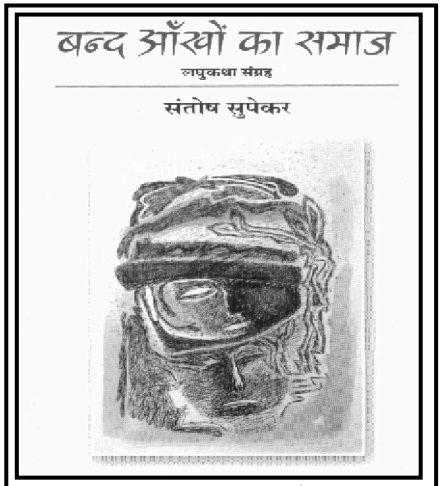

●**पुस्तक का शीर्षक** :- बन्द आँखों का समाज
●**पुस्तक की विधा:-** लघुकथा
●**लेखक:-** संतोष सुपेकर, ●**मूल्य:-150 रु.**
●**पृष्ठ संख्या:-** 140,
●**प्रकाशक:-** सरल काव्यांजलि, उज्जैन

वरिष्ठ साहित्यकार श्री सूर्यकांत नागर ने इस संग्रह की भूमिका में श्री सुपेकर को एक दृष्टि सम्पन्न व प्रतिबद्ध रचनाकार बताया है, जो सामाजिक समस्याओं के प्रति अधिक चिंतित है! इस चिन्ता और सामाजिक सरोकार को उनकी यह सशक्त लघुकथा 'सन्नाटा' बखूबी पेश करती है:

"बच्चों" विज्ञान की अध्यापिका ने पढ़ाने के दौरान पूछा- "बताओ, किस-किस वस्तु से हम जल सकते हैं?" "मैडम, आग से""गुड, और बताओ" "मैडम, बिजली के करन्ट से, एसिड से" "व्हेरी गुड, तुम बताओ जसवीर ?" अध्यापिका ने 6 वर्षीय गुमसुम बैठे बालक की ओर संकेत किया । "मैडम, दहेज न लाने से भी जल सकते हैं, जैसे मेरी माँ" भोलेपन में दर्द उभर आया और फिर कक्षा में सन्नाटा छा गया।

श्री राजेंद्र नागर ने संग्रह को लघुकथा लेखन के पैमाने पर खरा और उम्मीदभरा बताया है। पुस्तक का आवरण व रेखाचित्र श्री अक्षय आमेरिया की कलात्मक सोच का परिचायक है और संग्रह को आकर्षक बनाता है। कुल मिलाकर श्री संतोष सुपेकर का यह संग्रह सराहनीय और पठनीय है।

✍ **डॉ. पिलकेंद्र अरोरा,** वरिष्ठ समीक्षक, उज्जैन